अध्याय 2

वैदिक काल में मध्यप्रदेश

वैदिक युग

वेदों का स्थान भारतीय संस्कृति में गौरवमय है। वेद भारत की संस्कृति की अमूल्य निधि है। आर्यो के प्राचीनतम ग्रंथ वेद हैं। जिस प्रकार लौकिक वस्तुओं के देखने के लिए नेत्र आवश्यक हैं। उसी प्रकार अलौकिक ज्ञान के लिए वेद अपरिहार्य हैं। वेदों की रचना लगभग 3000 ई.पूर्व से लेकर 1500 ई. पूर्व तक होना माना जाता है। इसे ही वैदिक युग की संज्ञा दी जाती है। ऋग्वेद की रचना पूर्व वैदिक काल में एवं सामवेद, यजुर्वेद और अथर्ववेद की रचना उत्तर वैदिक युग में होना माना जाता है।

पौराणिक कथाओं के अनुसार अमरकण्टक वन प्रांत में कपिल मुनि और मार्कण्डेय ऋषि का आश्रम था। अमरकण्टक, नर्मदा और सोन नदी का उद्‌गम स्थल है जो आदिकाल से ऋषि मुनियों की तपो भूमि रहा है। नर्मदा नदी ऐसी नदी है जिसकी परिक्रमा की परम्परा है। इसे प्रदक्षिणा कहा जाता है।

मध्यप्रदेश की भूमि भगवान राम तथा कृष्ण के चरणों से पावन हुई है। रामायण तथा महाभारत दोनों में उल्लेख है कि अगस्त्य मुनि विन्ध्य पर्वत को पार करके दक्षिण गए थे। विन्ध्य ने ही भारत वर्ष को उत्तरापथ तथा दक्षिणापथ में विभाजित किया है। सुग्रीव ने वानरों को सीता की खोज का आदेश देते हुए कहा था कि वे अपनी खोज को विन्ध्य से प्रारम्भ करें फिर नर्मदा, गोदावरी, कृष्णा की ओर दक्षिण भारत जाएँ। भगवान राम अपने वनवास काल में चित्रकूट (सतना के निकट) में फिर दण्डकारण्य में लम्बे समय तक रहे। दण्डकारव्य क्षेत्र, चित्रकूट (मध्यप्रदेश) से बस्तर (वर्तमान छत्तीसगढ़) तक विस्तृत था। उनके वन गमन का मार्ग सतना, शहडोल होता हुआ दक्षिण-कोशल अर्थात् वर्तमान छत्तीसगढ़ होकर गया था। दण्डक वन में वाल्मीकि, अत्री, शरभंग आदि ऋषियों के आश्रम थे।

पुराणों में उज्जैन नगर का नाम आता है। क्षिप्रा के पूर्वी तट पर स्थित भारत की अनादि नगरी उज्जयिनी को भारत की सांस्कृतिक - काया का मणि-चक्र माना गया है। पुराणों में उज्जयिनी, अवंतिका, अमरावती, प्रतिकल्पा, कुमुद्वनी आदि नामों से इसकी महिमा गायी गई है। इस नगरी के ऋषि सांदीपनि महाकात्यायन, भास, सिद्धसेन, दिवाकर, भर्तृहरि, कालीदास, वराहमिहिर, बाणभट्ट आदि महापुरुषों का घनीभूति संबंध रहा है। पुराणों व महाभारत में उल्लेख आता है कि कृष्ण, बलराम व सुदामा ने यहाँ गुरु सांदीपनि के आश्रम में विद्या प्राप्त की थी।

द्वापर युग की सबसे महत्वपूर्ण घटना महाभारत का युद्ध है। इस युद्ध में कृष्ण अर्जुन के सारथी के रूप में पाण्डवों के साथ रहे। महाभारत तथा पुराणों में मध्यप्रदेश के अनेक स्थानों तथा राजवंशों और ऐतिहासिक घटनाओं

का वर्णन मिलता है। अट्ठारह प्रमुख पुराणों में नर्मदा पुराण का उल्लेख आता है।

महाभारत के अनुसार उस समय महिष्मति (महेश्वर) पर नील नाम का राजा शासन करता था। नील तथा अवंति के विंध और अनुविंध कौरवों की ओर से महाभारत के युद्ध में शामिल हुए थे। महाभारत काल में ही चेदि राज्य का उल्लेख आया हैं, जिसका विस्तार पश्चिम में बेतवा और उत्तर में यमुना नदी तक था और उसमें सम्पूर्ण बुन्देलखण्ड का भू-भाग आता था। चेदि देश में महाभारत के समय शिशुपाल नाम का राजा था, जिसकी राजधानी चन्देरी में थी। शिशुपाल, सम्राट जरासंध की सेना का सेनापति था। श्रीकृष्ण ने जरासंध को परास्त किया और शिशुपाल का भी वध किया। महाभारत में ही त्रिपुरी (तेवर,जबलपुर)के संबंध में कहा गया है कि उसका नाम त्रिपुरी इसलिए पड़ा था क्योंकि वह तीन असुरों के अधिकार में था।

बुरहानपुर जिले में असीरगढ़ में एक शिव मंदिर है, माना जाता है कि, महाभारत काल में अश्वथामा यहाँ शिवजी की पूजा करता था इसलिए इसे अश्वथामा मंदिर भी कहा जाता हैं। पचमढ़ी में पाण्डव गुफाएँ हैं। जनश्रुतियों के अनुसार पाण्डवों ने अपने निर्वासन का कुछ समय यहाँ बिताया था।

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न-1 रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए -

प्रश्न-1 आर्यों के प्राचीनतन ग्रंथ.....हैं।

प्रश्न-2 वेदों की रचना लगभग 3000 ई.पूर्व से लेकर .....ई. पूर्व तक माना जाता है।

प्रश्न-3 बुरहानपुर जिले में असीरगढ़ में एक .....मंदिर है।

प्रश्न-4 पचमढ़ी में .....गुफाएँ हैं।

प्रश्न-2 लघुउत्तरीय प्रश्न-

प्रश्न-1 वेद कितने प्रकार के हैं?

प्रश्न-2 उत्तरापथ तथा दक्षिणापथ किस पर्वत श्रेणी द्वारा विभाजित किए गए हैं?

प्रश्न-3 श्रीराम ने अपने वनवास का समय मध्यप्रदेश में कहाँ बिताया था?

प्रश्न-4 श्रीकृष्ण व सुदामा ने कहाँ शिक्षा प्राप्त की थी?

प्रश्न-5 पुराणों में किस नगर का उल्लेख मिलता है?